OM-3 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/04/2021 2:26 PM Page 6

श्रेय नहीं लिया... श्रेष्ठ बन गई

ब्र.कु. चक्रधारी दीदी,दिल्ली शक्ति भवन और रशिया में मॉस्को और पीटर्सबर्ग के जितने भी सेवाकेन्द्र हैं उनकी डायरेक्टर हैं। एक बार की बात है, इंग्लैंड में एक कुमार-कुमारी ज्ञान में चलते थे, लेकिन थोड़े समय के बाद दोनों ने आपस में शादी कर ली और एक बच्चे को भी जन्म दिया। फिर काफी समय के बाद वे पुनः दादी से मिलने आये, तब दादी ने कहा कि अपने बच्चे को क्यों नहीं लायी, मुझे पता चला कि आपका बेटा भी है। तो दोनों ही रोने लगे, दादी ने कहा कि क्या बात है रो क्यों रहे हो। तब उन्होंने कहा कि दादी- बच्चा जन्म से ही अंधा है। कर्म हमने बुरे किए लेकिन शायद हमारे बुरे कर्मों का फल हमारे बच्चे को भोगना पड़ा। दादी ने कहा ऐसा कभी नहीं हो सकता। हरेक अपने कर्मों का फल स्वयं ही भोगता है। लेकिन दूसरे ही दिन दादी के कहने पर वो बच्चे को लेकर दादी के पास आये। सतगुरुवार का दिन होने के कारण दादी सभी को अमृत पिला रही थीं। माँ बच्चे को दादी के सामने लाई, तो दादी ने उसके मुख में अमृत(जल) डाला। बच्चे को अवश्य जल स्वादिष्ट लगा। जल पीने के कुछ ही देर बाद वो पुनः माँ की गोदी से उठा और दादी की तरफ आया और दादी के गाल पर हाथ रख करके कहता है कि मुझे पुनः दो, तो दादी ने दोबारा उसके मुख में जल डाला। और पीकर फिर वो माँ के पास गया। तब दादी ने उसकी माँ से कहा कि तुम कहती हो कि ये अंधा है, अगर अंधा है तो इसे कैसे पता कि मैंने ही इसे जल पिलाया है। और मुझे ही गाल पर हाथ लगाकर इशारा करके पुनः जल मांगता है और जल पीने के पश्चात् तुम्हारे ही पास चला गया। तो मैं नहीं समझती कि ये अंधा है। एक बार डॉक्टर से पुनः इसका चेकअप कराओ। बच्चे की माँ ने कहा कि डॉक्टर ने हमें लिखत में जवाब दे दिया, क्योंकि तीन ऑपरेशन भी इसके हो चुके हैं। अब कैसे उसके पास लेकर जायें। दादी के आग्रह करने पर वह पुनः डॉक्टर के पास गये। डॉक्टर ने कहा कि जब सर्टिफिकेट दे दिया कि अंधा है तो फिर क्यों लाये? उन्होंने कहा कि हमारे बड़ों ने कहा है कि एक बार चेक कराओ। तब डॉक्टर ने देखा और कहा कि कल तक ये अंधा था, लेकिन आज ये अंधा नहीं है। उसके बाद बच्चा अपना जन्म दिन तब तक नहीं मनाता था जब तक दादी न आ जाये।

सब लोगों को पता था दादी के अमृत(जल) पिलाने के बाद ही उसकी आँखों की रोशनी आई। किन्तु दादी ने कभी ये स्वीकार नहीं किया कि मेरे जल पिलाने से इसकी आंखों की रोशनी आयी। इसके पूर्व कर्म की भोगना पूरी हुई और रोशनी आने का निमित्त कारण ये अमृत जल बना। दादी कभी अपनी महिमा स्वीकार न करते हुए सदा ही बाबा की महिमा करती रहीं।

जब ग्लोबल कोऑपरेशन हाउस बन रहा था तो दादी ने कहा कि मैं कभी उधार लेकर मकान नहीं बनाऊंगी। दादी हमेशा कहती थीं कि बाबा ने कर्ज को मर्ज कहा है। परन्तु आर्किटेक्ट से भी बात हो चुकी थी कि समय पर भवन बन जाने पर हमें उन्हें पैसा देना होगा और नहीं दे पाये तो दण्ड भरना पड़ेगा। और भवन बनने का जो समय निश्चित था अगर भवन उस समय में नहीं बना तो उन्हें दण्ड भरना पड़ेगा। भवन का बनना निश्चित हो चुका था। दादी ने क्लास में भी बताया कि इतना पैसा नहीं है हालांकी सारे विश्व के सेवाकेन्द्रों के योग से भी बन रहा था लेकिन दादी ने कहा कि आजकल इतना धन नहीं है इसमें जो भी अपना तन से, अपनी विशेषताओं का सहयोग दे सकते हैं तो अपना सहयोग देकर इस भवन को कम्पलीट करो। तो ऐसे में एक भाई ने जहाँ वो सर्विस करते थे वहाँ कारपेन्टरी का काम होता था तो उन्होंने वहाँ कहा कि ऐसे-ऐसे स्थान बन रहा है,धार्मिक स्थल बन रहा है, अगर वहाँ कोई सेवा करना चाहता है फ्री, तो अपनी सेवायें दे सकते हैं। तो एक युगल ने वहाँ जाकर सेवा करना स्वीकार किया। सेवाओं के दौरान उस युगल को एक दिन रास्ते में जाते वक्त अचानक सड़क के बीचों बीच एक मनुष्य गिरा हुआ मिला। उन्होंने जाकर देखा तो उसने शराब ज़्यादा पी हुई थी। वो खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। उन्होंने उस व्यक्ति को अपनी कार में डाला और होश आने पर उसके कपड़े बदलाकर, ठीक करके उसे उसके घर भेज दिया। कुछ समय के पश्चात जब उस व्यक्ति ने शरीर छोड़ दिया तो इस युगल को कोर्ट से बुलावा आया। उस व्यक्ति ने मरने से पूर्व ये लिखा था कि 40000 पोंड इस युगल को मेरी तरफ से दिए जायें। अब वो 40000 पोंड देने के लिए कोर्ट ने उन्हें बुलाया था। और 40000 पोंड लेकर वो दादी जी के पास आये, कहा दादी आज यज्ञ में भवन बन रहा है इसकी आवश्यकता है, इसलिए 15 हज़ार पोंड हम अपने पास रखेंगे। एक छोटा-सा कमरा हम लेंगे और 25 हज़ार पोंड बाबा की भंडारी में डालेंगे। दादी ने कहा कि कुछ और भी रख लो कोई हर्जा नहीं, तो बोले नहीं दादी 25 हज़ार पोंड भंडारे में डालेंगे। दूसरे दिन वो 15 हज़ार पोंड भी लेकर आ गये। उन्होंने कहा कि दादी जी हम तो टूटे हुए मकान में रह ही रहे थे और रह भी सकते हैं। आज जब इस भवन को बनाने के लिए आवश्यकता है तो ये भी आप रख लीजिए। दादी के मना करने के बाद भी उन्होंने बाबा के बॉक्स में डाल दिया। ठीक समय पर भवन बन गया, कार्य निपट गया और फिर वो चले गए। कुछ समय के बाद दादी ने ऑक्सफोर्ड में एक रिट्रीट सेंटर खरीदा। जिसमें 90 कमरे बने हुए थे और वो भी एक रानी का पैलेस था। उन्होंने कहा कि फाइनल पेमेंट करने पर आपको चाबियां हैंड ऑवर कर दी जायेंगी। और पता चला कि दो बड़े-बड़े कट्टे, उसमें चाबियां थी। किस दरवाजे की, किस अलमारी की, कौन-सी है। अब दादी ने कहा कि ये तो बहुत बड़ी प्रॉब्लम आ गई और कौन इन चाबियों को समेटेगा, सम्भालेगा और कौन पहचानेगा कि किस दरवाजे की कौन-सी चाबी है। फिर दादी को विचार आया कि वो युगल जो बढ़ई आता था, उनसे पूछना होगा वो फ्री थे, उनका कोई बच्चा भी नहीं था। तब उन्होंने उस युगल को बुलाया और कहा कि ऐसे-ऐसे हम एक भवन ले रहे हैं उसकी चाबियां सम्भालने वाला, कोई करने वाला नहीं है, क्या आप ये चाबियां सम्भालेंगे? तो उन्होंने कहा कि दादी जी हम वहाँ भी रहते हैं, तो हम यहाँ भी रह जायेंगे। दादी ने कहा कि परमानेंट इस पैलेस में रहने वाले आप होंगे। बाकी रिट्रीट करने वाले आयेंगे और चले जायेंगे। लेकिन चाबी लगाना, हर चीज़ को जानना ये आपके ऊपर रहेगा। उन्होंने स्वीकार किया।

आप सोचिए एक छोटे से मकान के लिए 40000 हज़ार पोंड उन्होंने बाबा के बॉक्स में डाले और बाबा ने उन्हों को इतना बड़ा पैलेस परमानेंट रहने के लिए दे दिया। दो रूम उनको मिल गए। भगवान किसी का रखता नहीं है, कहता है एक कदम तुम बढ़ो और पदम कदम मैं बढ़ूंगा। ये दादी जी ने करके दिखाया और हम सभी के सामने एग्ज़ाम्पल हैं। उस दादी ने बड़े प्यार से न केवल बाबा के बच्चों की पालना की किन्तु सम्पर्क और सम्बन्ध में आने वालों की भी पालना करते हुए सर्वस्व त्याग करने को तैयार हुए। ऐसी थी हमारी आदरणीय प्यारी दादी जी।

हिज होलीनेस दलाई लामा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी जानकी जी।

पूर्व प्रधानमंत्री माननीय राजीव गांधी जी के साथ हैं दादी प्रकाशमणि जी एवं दादी जानकी जी।

बैरोनेस वर्मा द्वारा 'भारत गौरव अवार्ड' से सम्मानित दादी जानकी जी की ओर से अवार्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु. जयंती दीदी,यूरोपीय सेवाकेन्द्रों की निदेशिका।

दादी जानकी जी को 2008 में पुणे में 'सद्गुरु भूषण पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी अन्ना हज़ारे जी तथा अन्य।

ब्र.कु. वेदांती दीदी,निदेशिका अफ्रीका

सर्व के लिए बड़ा दिल रखो

दादी विश्व की माँ तो है ही है, लेकिन मेरे लिए एक विशेष माँ से बढ़कर एक विशेष पार्ट बजाया। दादी जब पहले मिली तो ऐसी दृष्टि मिली, अहमदाबाद से आबू ले आये, बाबा से मिलाया, नाम रंजन से वेदान्ती करा दिया। रंगीन कपड़ों से सफेद कपड़ा पहनवा दिया और मुझे याद है शुरू-शुरू में जैसे डर लगता है न तो दिल छोटा हो जाता था कोई-कोई बात में, तो दादी ने शुरू में ही कहा कि वेदांती छोटा दिल नहीं करो किसी बात में। तब से लेकर आज तक दादी ने खाली डायरेक्शन, करेक्शन या एडवाइज़ नहीं पर वो पावर दे दिया कि कुछ भी हो जाये लेकिन किसी भी बात में छोटा दिल नहीं करना है। तो दादी ने जैसे बड़ा दिल बना दिया। उसके आगे दादी जब फर्स्ट विदेश यात्रा पर जा रही थी तो मैं एयरपोर्ट तक बॉम्बे दादी को बाय-बाय करने गयी। तो मैंने दादी को कहा कि आप तो विदेश की सेवा करने जा रहे हो तो अब हमें भारत में क्या करना है। तो दादी ने कहा कि जो महारथी होता है वो दीवार को जम्प लगाकर तोड़कर आगे जाता है। दादी के वो शब्द कुछ समय में ही साकार हो गये। मेरा अफ्रीका और विदेश की सेवाओं का पार्ट शुरू हो गया। दादी बहुत नहीं बोलती थी, थोड़े ही शब्द बोलती थी। पर वो थोड़े शब्दों में सबकुछ कह देती थी। तो अभी लास्ट जब मैं मधुबन आई तो दादी ने कहा कि दादी से जितना बैठना है, मिलना है समय बिता लो, समय का भरोसा नहीं। तो मैंने हँस कर कहा कि दादी आप अफ्रीका आयेंगी, अभी 103 साल की दादी को मैं कह रही हूँ कि अफ्रीका आयेंगी। बोला हाँ-हाँ हंसा से बात कर लो। हंसा से बात की और दादी आयीं। 103 साल की उम्र में दादी नैरोबी आयीं। दादी का जो हर कार्य में पावरफुल थॉट था,वो कार्य कर रहा था और कर रहा है। ऐसी दादी के लिए हमें दिन-रात बापदादा की प्रत्यक्षता का कार्य करने के लिए, हमें दृढ़ संकल्प लेने का ऐसा सुन्दर मौका है और मैं ये कहूंगी कि दादी ने पालना दी तो साथ-साथ में जयंती बहन के साथ इतना सुन्दर रिलेशन करवाया और कहा कि ये दो बॉल मेरे हाथ में थे। वेदांती और जयंती। दोनों बॉल मैंने फेंके तो एक मेरे गोल-गोल घूम रहा है और एक दूर जाकर घूम रहा है। वो कहीं और सेवा पर, और मैं कहीं और सेवा पर। आज भी मेरे दिल से यही निकलता है कि दादी बोलिए मुझे क्या करना है, मैं हर एक बात करने के लिए तैयार हूँ।